॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्री खंडगिरि उदयगिरि पूजन।

रचयिता—

मुनीम मुन्नालाल, सुन्दरलाल जैन,

मु० खंडगिरि सिद्धक्षेत्र।

प्रकाशिका—

सौ० श्रीमती चतुराबाईजी,

चौधरी बाजार-कटक।

प्रथमावृत्ति १५००] [मूल्य सदुपयोग

जैनविजय प्रेस-सूरत में मूलचंद किसनदास कापड़ियाने मुद्रित की।

निवेदन।

विदित हो कि यह दोनों प्रकारकी दो पूजनें मान बड़ाईके खातिर नहीं किन्तु इनका अभाव होनेके कारण भक्तिभावसे बनाई गई हैं। रचयिताओंने ये दोनों पूजाएं हमें बताई तो हमने पसंद कीं व प्रकाशित करनेका विचार किया पश्चात् हमने कटक जाकर बा० कन्हैयालालजी रईससे इस बाबत कहा, तो आपने स्वीकारता दी। आप व आपकी धर्मपत्नी अतीव धर्मप्रेमी हैं। आप कटकमें अति प्रसिद्ध पुरुष हैं, व वर्षमें कई रुपया चार दानमें खर्च करते हैं। और आज यह पुस्तक भी आपकी धर्मपत्नी सौभाग्यवती श्रीमती चतुराबाईजीकी ओरसे "जैनमित्र" के ग्राहकोंको मुफ्त वितरण की जारही है। व कुछ कापी विशेष छपाई गई हैं अतः जिन भाइयों या मंदिरोंमें आवश्यक्ता हो वे आध आनेका टिकिट भेजकर सौ० श्रीमती चतुराबाईजी धर्मपत्नी बा० कन्हैयालाल कपूरचन्दजी जैन चौधरी बजार कटक Cuttack से मंगा लेवें।

ता० १९-३-२१ } ब्र० आत्मानन्द गढ़ाकोटा
सागर।

पूजारियोंके नित्य कर्म।

सवेरे ६ या ६। बजे स्नानकर श्री मंदिरजीकी शुद्ध धोती पहिनकर प्राशुक जल भरकर श्री मंदिरजीमें जावें। व थोड़ी लोंगें कूटकर जलमें डाल देवे। पश्चात् पूजनके बर्तन सूखे अङ्गोछासे झटकार कर जलसे धोना व अष्ट द्रव्य धोकर चौकीपर रखना। व द भीतरकी चौकी धोकर उस पर १ रकाबी और एक छोटा लोटा (बन्टा) जलका प्रक्षालके वास्ते रखना तथा प्रथम सूखे अङ्गोछासे सर्व प्रतिमाओंको धीरे २ जीव रहित करके एक अङ्गोछा पानीमें भिगोकर श्री प्रतिमाओंका प्रक्षालन करना। बाद सूखे अंगोछासे प्रतिमाओंको जल रहित करै (यानी प्रतिमाओंके बदनमें पानी लगा नहीं रहना चाहिये) तथा अंगोछी व रकाबीसे गन्धोदककी बूंद जमीनपर न गिरै, गिरनेसे भारी पाप बन्ध होता है। प्रक्षालन करते वक्त अपना मुँह धोती या चादरसे बन्द रखना चाहिये बाद गन्धोदक (अंगोछा रकाबीमें निचोडकर) की रकाबी छोटी मेजपर १ घण्टी जल सहित रख देना अंगोछी सुखाकर स्वयं गन्धोदक अपने पवित्र अङ्गोंमें लगावें।

पूजनके वास्ते धोए हुए अष्ट द्रव्यकी थाली चढ़ानेकी थालीसे ४ अंगुल ऊंचे आसन (अलग चौकी) पर रखना चाहिये तथा चढ़ानेकी थालीसे ६ अंगुल ऊंचा स्थापना रखना।

चाहिये। स्थापनामें कमलका चिन्ह बनाना चाहिये (❁) तथा चढ़ानेकी थालीमें सांथियां (卐) इस प्रकार बनाना चाहिये। मुँह उपरोक्त प्रकार कपड़े द्वारा बन्द ही रखना।

नित्य पूजा पुस्तकमेंसे देव शास्त्र गुरू पूजा, बीस विहरमान पूजा, अकृत्रिम कृत्रिम चैत्यालयोंका अर्घ, सिद्ध पूजा, तथा बाकी अर्घ देकर शांत पाठ, विसर्जन, स्तुतिपाठ व अष्टमी चतुर्दशीको चतुर्विन्शति तीर्थंकरोंकी पूजा करना चाहिए।

बाद स्थापना मस्तकपर चढ़ाय पुष्पोंको अग्निमें जला देना चाहिये। और द्रव्य गर्भालयसे निकाल बाहर रखना तथा वेदीपर क्रमानुसार कपड़ेसे साफ करना और भी बाकीका स्थान आले ताक वगैरह साफ करना तथा कूड़ा कचरा बाहर निकालना। मंदिरमें हर एक चीजकी देख भाल रखना। बाद हाथ धोकर बाहर आना अगर और जगहोंपर चैत्यालय हो तो विसर्जनके बाद अष्ट द्रव्य एक रकीबीमें रख छोड़ना सो मंदिरसे निपट कर सर्व जगहोंमें अर्घ देना तथा अंगलोना लेकर सर्व जगह श्री भगवानका अङ्ग अंगोछना।

श्री खंडगिरी क्षेत्र पूजन ।

(मुनीम मुन्नालालजी कृत)

अंगबंगके पास है देश कलिंग विख्यात ।
तामें खंडगिरी वसत दर्शन भये सुख पात्र ॥ १ ॥

जसरथ राजाके सुत अतिगुणवानजी ।
और मुनीश्वर पंच सैकडा जानजी ॥
अष्टकरम कर नष्ट मोक्षगामी भये ।
तिनके पूजहुं चरण सकल मम मल ठये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकलिंगदेशमध्य खंडगिरीजी सिद्धक्षेत्रसे सिद्धपद प्राप्त दशरथराजाके सुत तथा पंचशतक मुनि अत्र अवतर अवतर, अत्र तिष्ठ २ ठः ठः । अत्र मम सन्निहितो भव, भव वषट् ।

अथाष्टकं ।

अति उत्तम शुचि जल ल्याय, कंचन कलशभरा ।
करूं धार सुमनवचकाय, नाशत जन्म जरा ॥ १ ॥
श्री खंडगिरीके शीश जसरथ तनय कहे ।
मुनि पंचशतक शिवलीन देशकलिंग दहे ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी क्षेत्रसे दशरथराजाके सुत तथा पांचशतक मुनि सिद्धपदप्राप्तेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं ॥

केशर मलयागिरि सार, घिसके सुगंध किया ।
संसार ताप निरवार, तुमपद वसत हिया ॥ २ ॥ श्री खंड० ॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं ।
मुक्ताफलकी उन्मान, अक्षत शुद्ध लिया ।
मम सर्व दोष निरवार, निजगुण मोय दिया ॥ ३ ॥ श्री खंडगिरी० ॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ।
ले सुमन कल्पतरु थार, चुन २ ल्याय धरूं ।

तुम पदढिग धरताहि बाण काम समूल हरो ॥ ४ ॥ श्री खंडगिरि० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरि सिद्धक्षेत्रेभ्यो कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं ।

लाडू घेवर शुचि ल्याय, प्रभुपद पूजनको ।

धारूं चरनन ढिग आय, मम क्षुध नाशनको ॥ श्री खंडगिरी० ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं ।

ले मणिमय दीपक धार दोय कर जोड़ धरो ।

मम मोहांधेर निवार, ज्ञान प्रकाश करो ॥ श्री खंडगिरी० ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोहांधकारविनाशाय दीपं ॥

ले दशविधि गंध कुटाय, अग्निमझार धरों ।

मम अष्ट करम जल जांय, यातें पांय परूं ॥ श्री खंडगिरी० ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अष्टकर्मविध्वंशनाय धूपं ॥

श्रीफल पिस्ता सुबदाम, आम नारंगि धरूं ।

ले प्रासुक हेमके थार, भवतर मोक्षवरूं ॥ श्री खंडगिरी० ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥

जल फल वसु द्रव्य पुनीत, लेकर अर्घ करूं ।
नाचूं गाऊं इह भांत, भवतर मोक्ष वरूं ॥ श्री खंडगिरि० ॥ ९ ॥
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं ॥

अथ जयमाल ।

दोहा—देश कलिंगके मध्य है, खंडगिरी सुखधाम ।
उदयागिरि तसु पास है, गाऊं जय जय धाम ॥ १ ॥

पद्धड़ी छंद ।

श्री सिद्ध खंडगिरि क्षेत्र पात, अति सरल चढाइ ताकी सुजात ।
अतिसघन वृक्ष फल रहे आय, तिनकी सुगंध दशादिश जु छाय ॥१॥
ताके सुमध्यमें गुफा आय, तप मुनि सुनाम ताकी कहाय ।
तामें प्रतिमा दशयोग धार, पद्मासन हैं हरि चंवर ढार ॥ २ ॥
ता दक्षिण हैं सु गुफा महान तामें चौबीसों भगवान जान ।
प्रति प्रतिमा इन्द्र खडे दुओर, कर चंवर धरें प्रभु भक्ति ओर ॥ ३ ॥
आजूबाजू खडि देवि द्वार, पद्मावति चक्रेश्वरी सार ।

करि द्वादश भुजि हथियार धार, मानहुं निंदक नाहिं आवें द्वार ॥४॥
ताके दक्षिण चलि गुफा आय, सत बखरा है ताको कहाय ।
तामें चौबीसी बनीसार, अरु अन्य प्रतिमा सब योग धार ॥ ५ ॥
सबमें धरि चमर सुधरहिं हाथ, नित आय भव्य नावहिं सुमाथ ।
ताके ऊपर मंदिर विशाल, देखत भविजन होते निहाल ॥ ६ ॥
ता दक्षिण टूटी गुफा आय, तिनमें ग्यारह प्रतिमा सुहाय ।
पुनि पर्वतके ऊपर सु जाय, मंदिर दीरघ बन रहा भाय ॥ ७ ॥
तामें प्रतिमा मुनिराजमान, खड्गासन योगधरें महान ।
ले अष्ट द्रव्य तसुपूज्य कीन, मन बच तन करि भय धोक दीन ॥ ८ ॥
मानो जन्म सफल अपनो सुभाय, दर्शन अनूप देखो है आय ।
अब अष्टकरम होंगे चूर चूर, जातें सुख पाहें पूर पूर ॥ ९ ॥
पूरब उत्तर द्विय जिन सुधाम, प्रतिमा खड्गासन अति तमाम ।
पुनि चबूतरामें प्रतिमा बनाय, बारह भुजी है दर्शनीय ॥ १० ॥
पुनि एक गुफामें बिम्बसार, ताको पूजनकर फिर उतार ।
पुनि और गुफा खाली अनेक, ते हैं मुनिजनके ध्यान हेत ॥ ११ ॥

पुनि चलकर उदयगिरी सुजाय, भारी भारी गुफा हैं लखाय।
एक गुफामें बिम्ब बिराजमान, पद्मासन धर प्रभु करत ध्यान ॥१२॥
ताको पूजन मन बचन काय, सो भव भवके दुख जावें पलाय।
तिनमें एक हाथीगुफा महान्, तामें इक लेख विशाल धाम ॥ १३ ॥
पुनि और गुफामें लेख जान, पढ़ने जिनमत मानत प्रधान।
तहं जसरथ नृपके पुत्र आय, संगमुनि पंचशतक ध्याय ॥ १४ ॥
तप बारह विधिका यह करंत, बाईस परीषह बहु सहंत ॥
पुनि समिति पंचयुत चलें सार, दोषा छयालिस टल कर अहार ॥१५॥
इस विध तप दुद्धर करत जोय, सो उपजे केवलज्ञान सोय।
सब इन्द्र आय अति भक्तिधार, पूजा कीनी आनंद धार ॥ १६ ॥
पुनि धर्मोपदेश दे भव्यपार, नाना देशनमें कर विहार।
पुनि आय याही शिखर थान, सो ध्यान योग्य आघाति हान ॥१७॥
भये सिद्ध अनंते गुणन ईश, तिनके युगपदपर धरत शीष।
तिन सिद्धनको पुनि २ प्रणाम, सो सुक्ख अविचल सुधाम ॥ १८ ॥

वदतं भव दुख जावे पलाय, सेवक अनुक्रम शिवपद लहाय।
ता क्षेत्रको पूजत मैं त्रिकाल, कर जोड़ नमत हैं मुन्नालाल ॥ १९ ॥

घत्ता।

श्री खंडगिरी क्षेत्रं, अतिसुख देतं तरतहि भवदधि पार करें।
जो पूजे ध्यावे करम नसावे, वांछित पावे मुक्ति वरे ॥ २० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडागिरी सिद्धक्षेत्रेभ्यो जयमालार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-श्री खंडगिरी उदयगिरी, जो पूजै त्रैकाल।
पुत्र पौत्र संपति लहे, पावे शिवसुख हाल ॥

इत्याशीर्वादः।
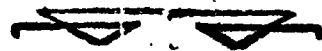
॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

अथ श्री खंडगिरी, उदयगिरी पूजन ।

दोहा ।

हाथ जोर बिनती करूं चरनों शीस नवाय ।
पूजन खंडगिरी रचूं, सुनों भव्य चितलाय ॥

अडिल्ल छंद ।

यह सिद्धक्षेत्र मनोज्ञ पुरातन जानिये ।
आदिनाथ जिनदेव मूल परिमानिये ॥
तिनके पूजों चरनकमल शिरनायकैं ।
तिष्ठो तिष्ठो देव कृपाकर आयकैं ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी उदयगिरी क्षेत्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी उदयगिरी क्षेत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।
ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी उदयगिरी क्षेत्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अति उत्तम शुचिजल ल्याय, प्रभु पद पूजनकों ।
यातैं जन्मजरा मिट जाय यही वर जाँचनकों ॥
श्री खंडगिरीके पास उदयागिरि सोहै ।
मुनि मोक्ष गये रिपुकाट, मनिमें हर्ष लहै ॥

ॐ ह्रीं श्री खंडगिरी उदयगिरी क्षेत्रेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय
जलं निर्वपामिति स्वाहा ॥ १ ॥

केसर कर्पूर मिलाय चन्दन सँग घिसौं ।
मम भव आताप विनाश मनिमें अति हुलसों ॥ श्री खंड० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उदय० सँसारतापविनाशनाय चँन्दनँ निर्वपा० ॥२॥

मुक्ताफलकी उनहार अक्षत शुद्ध लिया ।
अक्षय हित हे जिनराय आयों पूजकिया ॥ श्री खंडगिरी० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उदय० अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं ॥ ३ ॥

बेला मंदार सरोज सुबरन थार भरौं ।
तुम चरनन देत चढ़ाय, काम समूल हरो ॥ श्री खंडगिरी० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उद्य० कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं ॥ ४ ॥

खुरमा फैनी बहु भाँति घेवर शुद्ध लिया।
मम क्षुधा रोग निवारि तुम पद बसत हिया ॥ श्री खंड० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उद्० क्षुधारोग बिनाशनाय नैवेद्यं ॥ ५ ॥

ले दीप रतन बनवाय कन्चन थार धरूं।
यह मो अँधेर निवार ज्ञान उद्योत करूं ॥ श्री खंड० ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उद्० मोहांधकारविनाशनाय दीपं ॥ ६ ॥

ले धूप दशांगि सार अग्नि मझार दहौं।
सब आठों कर्म नसाय भवितर मोक्ष लहौं ॥ श्री खण्ड०

ॐ ह्रीं श्री खंड० उद्य० अष्टकर्मविनाशनाय धूपं ॥ ७ ॥

निंबू नारंगी बदाम पिस्ता लाय धरौं।
ले प्राशुक हेमके थार, शिव फल तुरत वरौं ॥ श्री खण्ड० ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उद्य० मोक्षफलप्राप्तये फलं ॥ ८ ॥

जल आदिक द्रव्य मिलाय अर्घ संजोय किया।

वर ये चाहूँ हरि बार तुम पद बसै हिया ॥ श्री खण्ड० ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० उदय० सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ९ ॥

प्रत्येक अर्घ ।

नवि मुनि गुफा मझार जिनालय जानिये ।
दश प्रतिमा पद्मासन सोपरि मानिये ॥
धम्भिके नीचे देवी सुन्दर मातजू ।
सोरहद्वय चमरेन्द्र जानिये भ्रातजू ॥
सिलालेख तहां तीन सु अति सोभा लहैं ।
पढनै बुध जन लोग पुरातनके कहैं ॥

ॐ ह्रीं श्री खंड० की नवि मुनि गुफामें दश प्रतिमा पद्मासन तथा सात प्रतिमाके नीचे देवी अठारह इन्द्रेभ्यो अर्घं ॥ २ ॥

दोहा—बारा भुजी गुफा विषे चौवीसी हैं महांनि ।
दो दालाने सभि अति हर्ष मान परिमान ॥

गीता छन्द ।

चौवीस देवी लसत सुखकर प्रभू नीचे जानिये ।
इय मुनेन्द्र धरैं ध्यान सु हरष हियमें आनिये ॥
है एक प्रतिमा पार्स प्रभुकी ध्यान पद्माशन धरैं ।
जो पूजते हैं भव्यजन वह मोक्ष लक्ष्मीको वरैं ॥
दूसरी दालांनिमें सु बिराजैं देवी दोयजू ।
चक्रेश्वरी पद्मावती कर दर्श हर्षसु लेयजू ॥

अडिल्ल छन्द ।

बारा भुजि तिनके अति उत्तम जानिये ।
ऊपर प्रतिमा आदिनाथजी मानिये ॥
बारह भुजिमें बारह लिये हथियारजू ॥
जासों निंदक लोग न आवें द्वारजू ॥
गुफा सामने मंदिर इक अति सोभनों ।
द्वारी चार प्रमाण हर्ष मनमें गनों ॥

तिसमें प्रतिमा नहीं न कारण पावहीं ।
काल दोष परभाय यहीं मन आवहीं ॥

ॐ ह्रीं श्री बाराभुजी गुफा मध्यविषैं चौबीसी तथा भगवान नीचे चौवीस देवी और दूसरी दालानमें चक्रेश्वरी पद्मावती देवी इन्द्र आदि तथा गुफा सामने एक खाली मंदिर श्री खंड० उद० क्षेत्रेभ्यो अर्घं ॥

सत बखरामें चौवीसी अति सोभनी ।
दो दालानें दीर्घ सु मनको मोहनी ॥
छह ह प्रतिमा खडगाशन जानिये ।
बाकी सब पद्माशन ध्यान बखानिये ॥
प्रति प्रतिमाके पास सुद्वय चमरेन्द्रजू ।
चमर धरैं हैं हात अतुल सुख लेयजू ॥

दोहा–अब प्रतिमा दीवालसे अलग विराजें सोय ।
आदिनाथ भगवानजी दर्श करो भव लोय ॥

गीता छन्द ।

दूसरी दालांनिमें सुथ क्षेत्रपाल बिराजहीं ।
पूजिये भव लोय पातिक कइ जनमके भाजहीं ॥
ताके सु ऊपर बनों मंदिर सुभग सुन्दर सोयजू ।
तामें सु प्रतिमा है तहा यों जानियो भवि लोयजू ॥

ॐ ह्रीं श्री लतिथखरा गुफा मध्यविषैं चौवीसी क्षेत्रपाल इन्द्र तथा त्रय प्रतिमा श्री आदिनाथ भगवानकी दीवालसे अलग श्री खंडगिरी उदय० क्षेत्रेभ्यो अर्घ ॥

टूटी गुफाके मध्य मनोहर ग्यारह प्रतिमा राजैं ।
खडगाशन सब योग धरें हैं पूजत हों दुख भाजैं ॥
सिलालेख तहां तीन बिराजे अति ही सुन्दर भासैं ।
अष्ट द्रव्य ले करिये पूजा तातें सब दुख भाजै ॥

ॐ ह्रीं श्री टूटीगुफाके मध्य ग्यारह प्रतिमा खडगाशन श्री खण्डगिरी उदयगिरी क्षेत्रेभ्यो अर्घ ॥

दोहा-जो मंदिरका चौतरा ताके नीचे सोय।
पारस प्रभुजी जानिये दर्श करो भवि लोय॥

ॐ ह्रीं श्री मंदिरके चौतरामें एक प्रतिमा खड्गाशन श्री खंड० उदय० क्षेत्रेभ्यो अर्घं॥

छोटे मंदिरमें है प्रतिमा एकजू।
आदिनाथजी विशाल मनोहर देखजू॥
तिनके पूजों चरणकमल शिरनायकैं।
अष्ट द्रव्य ले उत्तम अर्घ बनाय कैं॥

ॐ ह्रीं श्री छोटे मंदिर विषें एक प्रतिमा खड्गाशन श्री खंड० उदयगिरी क्षेत्रेभ्यो अर्घं।

छन्द मोती दाम।

मोटा मंदिर अति ही विशाल। तहं ग्यारह प्रतिमा हैं निहाल॥
लसैं दालानें द्वय सुभग सार। नमों दे अर्घ सु विविध प्रकार॥

ॐ ह्रीं श्री बडेमंदिरके विषें ग्यारह प्रतिमा खड्गाशन श्री खण्डगिरी उदयगिरी क्षेत्रेभ्यो अर्घं।

है अनन्त गुफा उत्तम सुखकार। तहां शुभ चित्र सु विविध प्रकार ॥
अनन्तानन्त श्री भगवन्त। बिराजें सिद्ध सदा सुखकन्द ॥
धरें खडगाशन ध्यान महांनि। तिन्हें ले पूजों अर्घ सुजान ॥
ॐ ह्रीं श्री अनेकों चित्रोंसे विचित्रित श्री अनन्तगुफाविषें एक प्रति- । सिद्ध भगवान खडगाशन श्री खंड० उदय० क्षेभ्यो अर्घ।

पद्धड़ी छन्द।

तहं उदयगिरीके मध्य थान। हाथी सु गुफा इक है महांनि ॥
तहां पद्माशन इक बिम्ब जान। दरवाजें हाथी सोभमान ॥
तिन प्रभुको पूजों अर्घ लाय। भव २ के दुख जैहैं पलाय ॥
तहां चित्र अनेक विचित्र रहैं। देखत ही मन हर्ष लहैं ॥
ॐ ह्रीं श्री उदय० की छोटी हाथीगुफाविषें श्री जिनबिम्बेभ्यो अर्घ।

चाल जोगीरायसेकी।

रानी गुफाके मध्य मनोहर इक प्रतिमा सु बिराजें।
दो मन्जिल जिसकी अति उत्तम चित्त अनेक सु छाजें ॥

ऊपर मन्जिलमें हैं मनोहर कोठी ग्यारह जानों।
नीचे मंदिरमें जिन बिम्ब सु कोठी ग्यारह मानों॥
ॐ ह्रीं श्री उदय० हाथीगुफाके नीचली मंजिलमें एक प्रतिमा
पद्मासन श्री खण्ड० उदय० क्षेत्रेभ्यो अर्घं॥
दोहा—आसपासके ग्राममें हैं जिन बिम्ब महांन।
निम्नप्रकारसु जानिये पाठक वृन्द सुजान॥
जोगीरायसा।
जाग मरा ऐगानिया जानों, वरमुन्डा सुखदाई।
मलीपडा अरु घाटकिया सुभ सरकनतार सुहाई॥
स्यामपुरा (स्यामपुर) अरु कपलेश्वर हैं भुवनेश्वर सुभ जानों।
शिशूपाल अरु पांडु गुफा हैं इत्यादिक परिमानों॥
सोरठा—और अनेकों ग्राम जहांपर श्री जिन बिम्ब हैं।
कहांतक करूं बखान। यहिंसे पूजों अर्घ ले॥
ॐ ह्रीं श्री आसपासके ग्रामोंमें जहां २ जिनबिम्ब तहां २ को
अनर्घपदप्राप्तये अर्घं।

अथ जयमाल ।

जितने मंदिर थे इहां दिये सर्व दरशाय ।
अब बरनों जयमालका सुनों भव्य मनलाय ॥

पद्धड़ी छन्द ।

जय खंडगिरि तीरथ महानि । अति सरल चढाई ताकी सुजान ॥
अति सघन वृक्ष लग रहें जाहि । तिनकी सुगंध दश दिसा मांहि ॥
परबत फुट ऊंचौ असी (१४०) साठ । सीढ़ीं इकसो बाईस तास ॥
गंगासागर इक कुन्ड जान । तहां श्रावकजन करते स्नान ॥
वसु धोय द्रव्य तहां तें सु आय । मंदिरमें पहुंचे तुरत जाय ॥
जय निश्यताम् जय निश्यताम् । मुखसें बोलें नर सिशु सु वाम ॥
कोई सामाइक करते विशाल । कोइ पाठ पढें आनन्द रसाल ॥
कोई स्तुत करते भांत भांत । गन्धोदिक लेते हात हात ॥
फिर सबजुर मिलकर पूजकीन । नाचत बहुविध मनि हरष लीन ॥
तन नन नन नन तन तान टोर । सन नन नन नन नन करत सोर ॥

छुम छन नन नन छुनन्न बजाय। तोम् तन नन नन सु सुतार लाय॥
झन नन नन झल्लर बजे सोय। घन नन नन घण्टा सोर होय॥
तबला धाधा किट किट सुहाय। मङ्गु चङ्ग बीन मृदंग आव॥
ताथेई थेई थेई थेई धरत पाव। नाचत राचत मन बहुत भाव॥
घृगतां घृगतां गत बाजत है। करताल रसाल सु छाजत है॥
इत्यादि अतुल मङ्गल सुठाठ। तिति सभा बनों सुरगिर विराट॥
इम भाव भगत सब करैं सोय। ताको कैसे वरनन जु होय॥
पुन चलकर उदयागिर पै आय। भारी भारी तहां गुफा थाय॥
सबमें सु मूल इक गुफा होय। हाथीय गुफा कहते हैं लोय॥
तिसमें इक लेख विशाल होय। दुइ गज चौडा चतु लम्ब होय॥
पुनि और गुफामें लेख जान। पढते बुधजन जानत सुजान॥
जो गुफा इहां खाली महांनि। तिनमें मुनि यति सब धरत ध्यान॥
ता क्षेत्रको पूजों मैं त्रिकाल। करजोड बीनवै सुन्दरलाल॥

घत्ता छन्द ।

श्री खंडगिरि क्षेत्रं, अति सुख देनं, तुरतहि भवि दधिपार करै ॥
जो पूजे ध्यावैं, विघन नसावैं, वांछित पावैं, सुःख वरैं ॥
ॐ ह्रीं श्री खण्ड० उदय० क्षेत्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
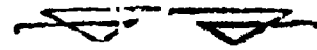
अडिल्ल छन्द—

खंडगिरि उदयगिरि जो पूजन करै ।
फलवान्छा कुछ नाहि प्रेम हिरदैं धरै ॥
एसही पूजा दान भक्तकर लीजिये ।
धन सम्पत सुख सुयश सहित वर लीजिये ॥

इत्याशीर्वादः ॥ सम्पूर्ण ॥

पूजनकरता परिचय ॥ चौपाई ॥

भूलचुक जो कहींपर होय । बुधजन शुद्ध करो सब कोय ॥
मैं मति मन्द बुद्धकर हीन । बुधजन मोय दोष मति दीन ॥
मैं तो लिखी भगतिमें आय । पढों सुनौं सज्जन चित लाय ॥
रियासत टीकमगढ़में जान । ग्राम लिधौरा बसत सुजान ॥
ताको रहनेवाला सोय । नाम है सुन्दरलाल जु मोय ॥
गोलालारो जैन सुभाय । पञ्चरत्नमो गोत्र कहाय ॥
इक नौ आठ एक पुनि सोय । विक्रम सम्वत् जानों लोय ॥
है अशाड शुभ चौथ महानि । दीतवार वार परमान ॥
ता दिन पूजा समापत कीन । मनिमें हर्ष लहो पर बीन ॥ इति ॥

प्रार्थी—

सुन्दरलाल जैन

मैनेजर श्रीखंडगिरी उदयगिरी क्षेत्र दिगम्बर जैन कार्यालय ।

पो० भुवनेश्वर (पुरी)।

विनती ।

वंदो श्री जिनराय मन वच काय करोजी ।
तुम माता तुम तात, तुमही परमधनीजी ॥
तुम जगसाचा देव, तुम सम अवर नहींजी ।
मैं तुम कबहुं न दीठ, गद्गद नैन भरेजी ॥
भ्रम्यो संसार अनंत, नहीं तुम भेद लखोजी ।
तुम सौ नेह निवार, परसौ नेह कियौजी ॥
पड़ता नरक मझार, अब उद्धार करौजी ।
तुमसों प्रेम करैंय, ते संसार तरैंजी ॥
तुम विन येते काल, मम सब विफल गयेजी ।
तुम वंदे दुख जाय, सब ही पाप टरैंजी ॥
इन्द्रादिक सब देव, ते तुम सेव करैंजी ।
जिभ्या सहस्र बनाय, तुम गुन कथन करैंजी ॥
रूप निहारन काज नैन हजार रचेजी ।

२६

भाव भक्ति मन लीन इन्द्रानी नृत्य करैजी ॥
अंग विचित्र बनाय थेई थेई तान करैजी ।
हूं पापी मतिहीन तुम गुन बिसर गयोजी ॥
मोह महा भट जोर, मम दुख बहुत दियोजी ।
तुम प्रभु दीनदयाल मम दुख दूर करौजी ॥

पद (भजन) ।

पुन्य पापका ख्याल जगतमें देखो सम्यक ज्ञानी हो ॥पुन्य॥टेक॥
पुन्नीके नित होत महोत्सव बाजत तबल निसांनी हो ।
पापी पंथ परे दुःख भोगैं रोवत रैंन विहानी हो ॥
झेला-पुन्नी महलनमझार सोवत पांव पसार । पलका नौरंगदार सेजनपरपेर है । चौकी चहुं दिशा चार हाथमें हथियार धार नांगी तलवार लिये रैंन दिना खड़े हैं । पापी मैदान माँहि ऊपर तरुकी न छाँहि नीचे विछौना नाहिं तन पै न चीर हैं । भूख सहैं प्यास सहैं दुरजनकी त्रास सहैं, सीत सहैं, घाम सहैं, दुरबल शरीर है ॥

दोहा–पुन्नीके सिर दूखते, सब मिल लगे पुकार।
पापी गिर सिरसैं गिरै, तिनकी सुध न समार ॥ पुन्य पाप ॥ टेक ॥
पुन्नी शीलरूप सुत नारी, सुत है आज्ञाकारी। पापीपन, तीनों वनिता विन न लहि काँनीकारी हो ॥

झेला- पुन्नी करै विहार पालकी पनिस तयार लगे सोरा कहार धन्य२ हो रही। जिनकौ जस जग मझार, घर घर आदर अपार, आज्ञा कोई न टार देखने सब धावहीं। पापी विचरैं पहार ईंधन सिर धरैं, भार ल्यावैं वैंचन बजार, अँध्यालौ आवहीं। पैसा दो मिले चार, अन्यका नहीं विचार घी गुड़की कौन सार शाक संगकौं नहीं ॥

दोहा–पुन्नी हुक्म सभाविषैं, सुनत सबै धर काँन ॥
पापी कर जोड़ें खड़े, देत कोई नहिं ध्याँन ॥पुन्य पापका ख्याल॥टेक॥

झेला–पुन्नी वस्त्राभूषण सुन्दर खटरस व्यँजन पानी हो, पापी ध्यावैं टूक न पावै घर२ जाँचत वाँनो हो ॥ पुन्नी मदमाते गज, आगे सैंन रही सज, देखै चौरंग दल वैरी मन डरै है ॥ कोई सिर छत्र दियै, कोई धीरा हाथ लिये कोई जस गावैं, कोई चौर ढोर रहे हैं। पापी

सिर नागे पाँव, आगे आगे दौरे जाय, देहकी खबर नाहिं, सीस बोझ धरैं हैं
कँकर गड़त जाँय, कँटक चुभत जाय, खैंचवे साता नाहिं, धूप माहिं जरैं हैं॥

दोहा—पुन्नी राजतखत चढे, भोगत सुक्ख अपार ॥
पापी सिर ऊगरे, फिर ठीक दुफर वनवास ॥ पुन्य पापका ॥ टेक ॥

झेला—पुन्नी षट्ऋतुके सुख भोगैं, आवत जात न जानीरे।
पापी अशुभाविपाक उदयपन, तीनौंमें हैरानीरे ॥

पुँन्नी भरैं भँडार, दाँन पुन्य करैं सार, आवत घर निध अपार, साँचे द्रव्यदृष्टि हैं। रूप तौ अनँग पाय, रोग सोक दूर जाय, सहजई सुगंध आय, सब गुनमें श्रेष्ट हैं ॥ पापी पचै दौर दौर रैंन दिना नहीं ठौर, लाभ हू का त तैं अनेक कष्ट सहैं हैं। लाभ तौ न होय और गांठ हू की जाय, दौर रोग सोग जोग जुरे एते सब अनिष्ट हैं ॥

दोहा—सब भैयनसैं वीनती मोहनकी चित देव।
पुन्य पाप मग प्रगट लख, जो चाहौ सौ लेव ॥ टेक ॥

पुन्य पापका ख्याल जगतमें देखौ सम्यकज्ञानी हो ॥ इति सम्पूर्ण ॥

ब्र० आत्मानंदजी जैन गढ़ाकोटा। सागर सी० पी०

अथ शांतिपाठ भाषा

चौपाई १६ मात्रा-शांतिनाथ मुख शशि उनहारी। शीलगुणव्रत-संयमधारी॥ लखन एक सौ आठ विराजैं। निरखत नयन कमलदल लाजैं॥ १॥ पंचम चक्रवर्तिपदधारी। सोलम तीर्थंकर सुखकारी॥ इंद्र नरेंद्र पूज्य जिननायक। नमों शांतिहितशांति विधायक॥ २॥ दिव्य विटप पहुपनकी वरषा। दुंदुभि आसन वाणी सरसा॥ छत्र चमर भामंडल भारी। ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥ ३॥ शांति जिनेश शांति सुखदाई। जगतपूज्य पूजौं शिरनाई॥ परमशांति दीजे हम सबको। पढैं जिन्हैं, पुनि चार संघको॥ ४॥

वसंततिलका-पूजैं जिन्हैं मुकुट हार किरीट लाके।
इंद्रादिदेव अरु पूज्य पदाब्ज जाके॥
सो शांतिनाथ वरवंशजगत्प्रदीप।
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप॥ ५॥

इंद्रवज्रा-संपूजकोंको प्रतिपालकोंको ।

यतीनको औ यतिनायकोंको ॥

राजा प्रजा राष्ट्र सुदेशको ले ।

कीजे सुखी हे जिन शांतिको दे ॥ ६ ॥

स्रग्धरा-होवै सारी प्रजाको सुख बलयुत हो धर्मधारी नरेशा ।

होवै वर्षा समैपै तिल भर न रहै व्याधियोंका अंदेशा ॥

होवै चोरी न जारी सुसमय वरतै हो न दुष्काल भारी ।

सारे ही देश धारैं जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी ॥ ७ ॥

दोहा-घातिकर्म जिन नाशकरि पायो केवल राज ।

शांति करौ सब जगतमें वृषभादिक जिनराज ॥

मंदाक्रांता-शास्त्रोंका हो पठन सुखदा लाभ सत्संगतीका ।

सद्वृतोंका सुजस कहके, दोष ढांकूं सभीका ॥

बोलूं प्यारे वचन हितके, आपका रूप ध्याऊं ।

तौलों सेऊं चरण जिनके मोक्ष जौलौं न पाऊं ॥ ९ ॥

अर्थ-तुवपद मेरे हियमें ममहिय तेरे पुनीत चरणोंमें। तबलों लीन रहो प्रभु, जबलों पाया न मुक्तिपद मैंने ॥ १० ॥ अक्षरपद मात्रासे दूषित जो कछु कहा गया मुझसे। क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाउ भवदुखसे ॥ ११ ॥ हे जगबंधु जिनेश्वर पाऊं तव चरण शरण बलिहारी। मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मोंका क्षय सुबोध सुखकारी ॥ १२ ॥

परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्। इति शांतिपाठ समाप्त।

अथ विसर्जनपाठ

दोहा-विनजाने वा जानके, रही टूट जो कोय। तुव प्रसादतैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥१॥ पूजनविधि जान्यों नहीं, नहिं जान्यों आह्वान। और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान ॥ २ ॥ मंत्रहीन धनहीन हूं, क्रियाहीन, जिनदेव। क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव ॥ ३ ॥ आये जो जो देवगन, पूजे भक्तिप्रमान। सो अब जावहु कृपाकर, अपने अपने थान ॥ ४ ॥ इति विसर्जन समाप्त।